Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 6, December-2022, ISSN 2230-7540

चिकनकारी कढ़ाई के विकास और वर्तमान परिदृश्य का अध्ययन

Kiran Sharma[1]*, Dr. Sushma Srivastava[2], Dr. Kamlesh Kumar[3]

[1] Research Scholar, Bhagwant University, Rajasthan

[2,3] Research Guide, Bhagwant University Rajasthan.

सार- *चिकनकारी कढ़ाई एक प्रमुख शिल्पकला है जो भारतीय सांस्कृतिक विरासत में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह शिल्पकला विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार सृष्टि करने में सक्षम है और स्थानीय विकास को प्रोत्साहित करने में मदद कर सकती है। यह अध्ययन चिकनकारी कढ़ाई के विकास और वर्तमान परिदृश्य की समीक्षा करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य चिकनकारी कढ़ाई के इतिहास, तकनीकी प्रक्रियाएं, और उत्पादों के विकास को विश्लेषण करना है। इसमें स्थानीय शिल्पकला के प्रति लोगों की रुचि को बढ़ावा देने, उन्हें उनके पारंपरिक कला और शिल्प में माहिर बनाने के लिए कदम उठाने का भी प्रयास किया गया है। वर्तमान परिदृश्य का विश्लेषण शिल्पकला के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ते प्रभाव के साथ होता है, जिससे इसका विपुल विस्तार हो रहा है। चिकनकारी कढ़ाई को विपुलता और अद्भुतता के साथ बढ़ावा देने के लिए नए डिजाइन और मार्गदर्शिकाएं प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया गया है।*

कीवर्ड- *चिकनकारी कढ़ाई, कशीदाकारी, लखनऊ, अंतर्राष्ट्रीय स्तर, शिल्पकला*

----------X----------

परिचय

चिकनकारी कढ़ाई लखनऊ की प्रसिद्ध शैली है कढाई और कशीदाकारी की। यह लखनऊ की कशीदाकारी का उत्कृष्ट नमूना है औरलखनवी जरदोजी यहाँ का लघु उद्योग है जो कुर्ते और साड़ियों जैसेकपड़ों पर अपनी कलाकारी की छाप चढाते हैं। इस उद्योग का ज़्यादातरहिस्सा पुराने लखनऊ के चौक इलाके में फैला हुआ है। यहां के बाज़ारचिकन कशीदाकारी के दुकानों से भरे हुए हैं। मुर्रे, जाली, बखिया, टेप्ची,टप्पा आदि 40 प्रकार के चिकन की शैलियां होती हैं। इसके माहिर एवंप्रसिद्ध कारीगरों में उस्ताद फयाज खां और हसन मिर्जा साहिब थे।

इस हस्तशिल्प उद्योग का एक खास पहलू यह भी है कि उसमें 95 फीसदी महिलाएं हैं। ज्यादातर महिलाएं लखनऊ में गोमती नदी के पार के राने इलाकों में बसी हुई हैं। चिकन की कला, अब लखनऊ शहर तक ही सीमित नहीं है अपितु लखनऊ तथा आसपास के अंचलों के गांव-गांव तक फैल गई है। महीन कपड़े पर सुई-धागे से विभिन्न टांकों द्वारा की गई हाथ की कारीगरी लखनऊ की चिकन कला कहलाती है। अपनी विशिष्टता के कारण ही यह कला सैंकड़ों वर्षों से अपनी लोकप्रियता बनाए हुए है। यदि कोई ब्रश और रंगों के सहारे चित्रकारी करे तो इसमें नई बात क्या हुई! लेकिन अगर ब्रश की जगह एक महीन सुई हो और रंगों का काम कच्चे सूत के धागों से लिया जा रहा हो और कैनवास की जगह हो महीन कपड़ा, तो ऐसी चित्रकारी को अनूठी ही कहा जाएगा। चिकन शब्द फारसी भाषा के चाकिन से बिगड़ कर बना है। चाकिन का अर्थ है- कशीदकारी या बेल-बूटे उभारना। जिस प्रकार मुगलकाल ने भारत की कला, संगीत और संस्कृति को समृद्ध किया और देश को ताजमहल और लालकिले जैसे अनेक इमारतें दीं उसी प्रकार चिकनकारी भी मुगलिया तहजीब की एक अनमोल विरासत है।

कहा जाता है कि मुगल सम्राट जहांगीर की पत्नी नूरजहां इसे ईरान से सीख कर आई थीं और एक दूसरी धारणा यह है कि नूरजहां की एक बांदी बिस्मिल्लाह जब दिल्ली से लखनऊ आई तो उसने इस हुनर का प्रदर्शन किया। नूरजहां ने अपनी बांदी से इसे स्वयं भी सीखा और आगे भी बढ़ाया। नूरजहां ने शादी महलों, इमामबाड़ों की दीवारों पर की गई नक्काशी को कपड़ों पर समेट लेने का पूरा प्रयास किया। नवाबों के जमाने में

www.ignited.in

भी चिकनकारी को खूब बढ़ावा मिला। कई नवाबों ने स्वयं भी चिकन के काम वाले अंगरखे और टोपियां आदि धारण कीं।

चिकनकारी में सुई धागे के अलावा यदि कुछ और प्रयोग होता है तो वह है आंखों की रोशनी और एक उच्चस्तरीय कलात्मकता का बोध। सुई धागों से जन्मे टांकों और जालियों का एक विस्तृत, जटिल किन्तु मोहक संसार है। तरह-तरह के टांकों और जालियों के अलग-अलग नाम हैं, उनकी रचना का एक निश्चित विधान है और उनकी निजी विशिष्टताएं हैं। लगभग 40 प्रकार के टांके और जालियां होते हैं जैसे- मुर्री, फनदा, कांटा, तेपची, पंखड़ी, लौंग जंजीरा, राहत तथा बंगला जाली, मुंदराजी जाजी, सिद्दीर जाली, बुलबुल चश्म जाली, बखिया आदि। सबसे मुश्किल और कीमती टांका है नुकीली मुर्री।

कच्चे सूत के तीन या पांच तारों से बारीक सुई से टांके लगाए जाते हैं। जिस कपड़े पर चिकनकारी की जाती है पहले उस पर बूटा लिखा जाता है। यानि लकड़ी के छापे पर मनचाहे बेलबूटों के नमूने खोद कर इन नमूनों को कच्चे रंगों से कपड़े पर छाप लिया जाता है। इन्हीं नमूनों के आधार पर चिकनकारी करने के बाद इन्हें कुछ खास धोबियों से धुलाया जाता है जो कच्चा रंग हटा देते हैं साथ ही काढ़ी गई कच्चे सूत की कलियों को भी उजला कर देते हैं।

वाजिद अली शाह जैसे कला प्रेमी और नवाबों की विरासत और शान-ए-शौक की कहानियां शहर का जर्रे-जर्रा आज भी सुनाता है। कत्थनक नृत्य और ठुमरी गायन भी शहर-ए-लखनऊ की ही देन है। चिकनकारी की कला भी लखनऊ की इसी तहजीब और विरासत का एक हिस्सा है। चिकन लब्ज़ टर्किश शब्द 'चिख' से ईजाद किया गया है। इसका अर्थ हिंदी में छोटे-छोटे छेद करना होता है। आपको बता दें कि मुर्रे, जाली, बखिया, टेप्चील, ठप्पा आदि चिकनकारी के 40 प्रकारों में से कुछ प्रमुख नाम हैं।

इतिहास और आरंभ

भारतीय चिकनकारी का काम तीसरी शताब्दी से होता रहा है। चिकन शब्द शायद फ़ारसी के चिकिन या चिकीन शब्द से लिया गया है जिसका मतलब होता है कपड़े पर एक तरह की कशीदाकारी। लखनऊ में चिकनकारी का काम दो सौ सालों से भी पहले से होता रहा है। लेकिन किवदंतियों के अनुसार 17वीं शताब्दी में मुग़ल बादशाह जहांगीर की बेगम नूरजहां तुर्क कशीदाकारी से बहुत प्रभावित थीं और तभी से भारत में चिकनकारी कला का आरंभ हुआ। ये भी माना जाता है कि आज चिकनकारी वाले लिबासों पर जो डिज़ाइन और पैटर्न नज़र आते हैं उसी तरह के डिज़ाइन और पैटर्न वाले चिकनकारी के लिबास बेगम नूरजहां भी पहनती थीं।

जहांगीर भी इस कला से बहुत प्रभावित थे और उनके संरक्षण की वजह से ये कला ख़ूब फलीफूली थी। उन्होंने इस कला में निखार लाने और महारथ हासिल करने के लिये कई कार्यशालाएं बनाईं थीं। इस अवधि (मुग़लकाल) में अधिकतर मलमल के कपड़ों का इस्तोमाल होता था क्योंकिमलमल, सूखे और उमस भरे मौसम में सुकून देता था।

मुग़लकाल के पतन के बाद 18वीं और 19वीं शताब्दी में चिकनकारी के कारीगर पूरे भारत में फैल गए और उन्होंने चिकनकारी के कई केंद्र खोल दिए। इनमें से लखनऊ सबसे महत्वपूर्ण केंद्र था जबकि दूसरे नंबर पर अवध का चिकनकारी केंद्र आता था। उस समय बुरहान उल मुल्क अवध का गवर्नर और ईरानी अमीर था। वह चिकन का मुरीद भी था जिसने इस कला के गौरवशाली अतीत की बहाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उनका ये योगदान आज भी ज़िंदा है। हालंकि आज लखनऊ चिकनकारी का गढ़ है लेकिन पश्चिम बंगाल और अवध ने भी इसके विकास में भूमिका अदा की थी।

किस्म और शैलियां

ऐसा लगभग मुश्किल से ही होता है कि लखनऊ चिकनकारी का लिबास हो और उस पर फूलों के पैटर्न या रुपांकन न हों। चिकनकारी कला में चूंकि ईरानी सौंदर्य-शास्त्र का गहरा प्रभाव है इसलिये डिज़ाइन में फूलों का होना एक तरह से अपरिहार्य है। फूलों की किस्म (बूटी, पत्तियां और बेलबूटे के रुपांकन सहित) और इन्हें बनाने की शैलियां फैशन के चलन के साथ बदलती रही हैं लेकिन इनकी जटिलता और नज़ाकत जस की तस रही है।

शुरु शुरु में चिकनकारी सफेद धागे से बनाए गए मलमल या सामान्य कपड़े पर की जाती थी लेकिन समय के साथ इसमें और हल्के रंगों और फ्लॉरेसेंट का समावेश हो गया। चिकनकारी के लिये रेशम, शिफॉन, जार्जट, नैट, महीन कपड़ा, कोटा, डोरिया, ऑरगेंजा, कॉटन और कृतिम कपड़े जैसे मुलायम फैब्रिक (कपड़ा) जरुरी होता है क्योंकि इन पर हाथ से सिलाई होती है। मुलायम कपड़े की वजह से न सिर्फ लिबास हल्का रहता है और इस पर कढ़ाई भी आसानी से हो जाती है बल्कि इस पर कारीगरी अलग ही नज़र आती है। महिलाओं और पुरुषों की तरह तरह की पोशाकों पर चिकनकारी देखी जाती है। आप लंबे कुर्ते से लेकर साड़ी, अनारकली और प्लाजो खरीद सकते हैं। यहां तक कि बाज़ार में चिकनकारी वाले लैंपशेड, सोफा और मेज के कवर जैसे घरेलू सामान भी उपलब्ध हैं।

www.ignited.in

वर्तमान में चिकनकारी

लखनऊ चिकन कशीदाकारी अपने आरंभ के बाद से घटती-बढ़ती रही है। मुगलकाल और नवाबों के दौर में इसने जहां सुनहरे दिन देखे थे, वहीं बाद के वर्षों में अंग्रेजों के शासनकाल में इसकी लोकप्रियता में गिरावट आ गई थी। ये औद्योगिकिकरण का दौर था जब चिकनकारी का फिर से उदय हुआ और पहले की तरह उसकी लोकप्रियता हो गई। इसके व्यावसायीकरण होने में भी ज़्यादा समय नहीं लगा। चिकनकारी को राष्ट्रीय स्तर पर उसकी पहचान और लोकप्रियता बनाने में बॉलीवुड तथा चिकनकारी वाले लिबास बनाने वाली छोटी कंपनियों का बहुत योगदान रहा है।

अस्सी के दशक में औद्योगिकिकरण के दौरान जब लखनऊ चिकनकारी फिर से चलन में आई तो इसकी व्यावसायिक और सस्ती नकल भी होने लगी। इसकी लागत कम करने के लिये कपड़ों की नयी किसमें और कशीदाकारी की मशीनें आ गईं। इसके बाद जब भारतीय फैशन का नया लाभ कमाने वाला दौर आया तो छोटी बड़ी डिजाइनर कंपनियों ने उत्पाद को और खूबसूरत बनाने के लिये चिकन में क्रिस्टल, मुकेश(बादला) और ज़रदोजी जोड़नी शुरु कर दी। पिछले कुछ बरसों में रचनात्मकता के मामले में चिकनकारी के रुप में जबरदस्त बदलाव आ हैं और तरह तरह के कपड़ों और कढ़ाई के साथ प्रयोग होने लगे हैं। लेकिन बदलावों के बावजूद इसका मूल स्वरुप आज भी इसके जन्मस्थान लखनऊ में रचा बसा है।

चिकनकारी कढ़ाई फैशन उद्योग में वैश्विक योगदान

चिकनकारी कढ़ाई एक अद्वितीय और सुंदर हस्तशिल्प है, जिसने वैश्विक फैशन उद्योग में अपनी अद्वितीयता और सौंदर्यिक पहचान बनाई है। इस शैली की कढ़ाई ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बड़ी पहचान हासिल की है और फैशन उद्योग में कई तरीकों से योगदान किया है:

1. **शैली और रूचि**

आधुनिक फैशन में समाहिती: चिकनकारी कढ़ाई ने आधुनिक फैशन में अपना स्थान बनाया है। इसकी रूचियों और भव्यता ने इसे दुनियाभर के डिजाइनरों की पसंद बना दिया है, जो इसे अपनी कलेक्शन्स में शामिल करके नए आयाम दे रहे हैं।

2. **कला और रस्म**

कला की उच्चता: चिकनकारी कढ़ाई ने कला और कारीगरी की ऊँची मानकों को साबित किया है। इसमें उपयोग होने वाली सूजी और धागे के माध्यम से बनी फूलदार मोटीफ्स ने इसे एक श्रृंगार और कलात्मक रूप दिया है।

3. **अद्वितीयता और हस्तशिल्प**

हस्तशिल्प का जादू: चिकनकारी कढ़ाई में बाणी गई हर एक बूँद स्वर्गीय हस्तशिल्प की भावना को साफ़ करती है। इसकी एकप्रकारिता और हस्तकला ने इसे वैश्विक फैशन मानचित्र में बनाए रखा है।

4. **रोजगार सृष्ट: कला के कारीगरों का समर्थन:** चिकनकारी कढ़ाई ने विभिन्न क्षेत्रों में करीगरों को रोजगार प्रदान किया है, खासकर वहां जहां यह परंपरागतता से संबंधित है। इससे कला और शिल्पकला को सहारा मिलता है और समुदाय को आत्मनिर्भरता की दिशा में मदद मिलती है।

5. **अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियाँ**

फैशन ईवेंट्स और शोज: चिकनकारी कढ़ाई को विश्व स्तर पर प्रदर्शित करने के लिए अंतरराष्ट्रीय फैशन ईवेंट्स और शोज में भाग लेना। यहां इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिल सकती है और विश्व भर से प्रतिस्पर्धा कर सकती है।

6. **सामाजिक सांविदान्य**

शिक्षा और समर्थन: चिकनकारी कढ़ाई के प्रति वैश्विक समर्थन बढ़ाने के लिए समर्थन कार्यक्रम और शिक्षा अभियानों का समर्थन करें। इससे लोगों को इस कला के महत्व का अधिक ज्ञान होगा।

चिकनकारी कढ़ाई ने विश्वभर में फैशन उद्योग में एक सांस्कृतिक और कलात्मक स्थान बनाया है। इसकी सुंदरता, कला की माहिरी, और समृद्धिवर्धन की दिशा में इसका योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है, जिससे यह दुनिया भर में एक प्रमुख कला रूप में पहचाना जाता है।

साहित्य की समीक्षा

अनुराधा गुप्ता, 2022 चिकन लव्ज टर्किश शब्द 'चिख' से ईजाद किया गया है। इसका अर्थ हिंदी में छोटे-छोटे छेद करना होता है। आपको बता दें कि मुर्रे, जाली, बखिया, टेप्ची, टप्पा आदि चिकनकारी के 37 प्रकारों में से कुछ प्रमुख नाम हैं।

सीमा अवस्थी, 2022 चिकनकारी में गांठ या टांके के आधार पर ही चिकन के प्रकार का निर्धारण किया जाता है। चिकन कशीदाकारी मे यदि देखा जाये तो लगभग 40 प्रकार के टांके पाये जाते थे परन्तु वर्तमानकाल में सिर्फ 30 प्रकार प्रयोग में लाये जाते हैं। सभी प्रकारों को वृहत् रूप से तीन शीर्षों के अन्तर्गत विभाजित किया जा सकता है- 1. समतल टांके 2.

उभरे हुये उत्कीर्ण टांके 3. खुले जाफरीनुमा जाली कार्य चिकनकारी का कार्य इसके हस्तकौशल के कारण ही विशिष्ट और अनूठा है। चिकनकारी वृहत् प्रकार की शैलियों को अपने मे लिये हुये है जैसे की चाँद, धनिया पत्ती या चने की पत्ती आदि का आकार चने की पत्ती और धनिया के पत्ती की तरह होता है तथा इनकी महीन व उत्कृष्ट आकृतियाँ कपड़ों पर बनाई जाती हैं।

नंदिनी मुखर्जी, 2009 बात जब फैशन की होती है तो यहां एक्सपेरिमेंट की कोई सीमा नहीं होती। लोगों की डिमांड और कम्फर्ट के बेस पर फैशन इंडस्ट्री में लगातार बदलाव होते रहते हैं। वैसे तो किसी भी पुराने ट्रेंड को हल्के बदलावों के साथ पहनकर आप डिफरेंट लुक पा सकते हैं लेकिन कुछ एक फैशन और स्टाइल ऐसे हैं जो आज भी लोगों के फेवरेट्स की लिस्ट में टॉप पर हैं जिनमें से एक है चिकनकारी, एक खास तरह का एम्ब्रॉयडरी वर्क, जो नवाबों के शहर लखनऊ की खासियत है।

कहा जाता है कि चिकनकारी का काम मुगल बादशाह जहांगीर की बीवी नूरजहां की देन है। जो आज के मॉर्डन जमाने में भी अपनी पहचान कायम किए हुए है। और इंडिया ही नहीं, इंटरनेशनल मार्केट्स में भी इस चिकनकारी वर्क की काफी डिमांड है। कैजुअल से लेकर ब्राइडल लुक के अलावा रैंप शो में भी आप इसका टच देखने को मिल जाएगा।

प्रणय विक्रम सिंह, 2017 नजाकत और नफासतका का शहर लखनऊ अपने चिकनकारी के नायाब शिल्प के लिये कसीदाकारी की दुनिया में खास मुकाम रखता है। देश और दुनिया के वस्त्र बाजारों में लखनवी चिकन कुछ यूं है जैसे हजार मनकों के दरम्यान हीरा। महीन कपड़े पर सुई-धागे से विभिन्न टांकों द्वारा की गई हाथ की कारीगरी लखनऊ की चिकन कला कहलाती है। अपनी विशिष्टता के कारण ही ये कला सैंकड़ों वर्षों से अपनी लोकप्रियता बरकरार रखे हुए है। ज्ञात हो कि चिकनकारी की ये कला सोलहवीं सदी में नूरजहां हिंदुस्तान में लेकर आई थीं। लखनऊ में चिकनकारी का कारोबार सालाना करीब 4 हजार करोड़ रुपये का है। करीब 20 हजार लोग इस कारोबार से जुड़े हैं। लखनऊ हर साल अपने एक्सपोर्ट से 2 अरब रुपये से ज्यादा विदेशी मुद्रा कमाकर देता है।

अंजलि राजपुत, 2020 दुनियाभर में मशहूर चिकन के कपड़े और चिकनकारी कढ़ाई अपनी सादगी और अलग अंदाज के लिए जानी जाती है। लखनऊ, शुरू होने वाली चिकनकारी की डिमांड सिर्फ आम कपड़े ही नहीं बल्कि ब्राइडल वियर्स में भी काफी रहती है। भारत की इस प्रसिद्ध हस्तशिल्प ने राजघरानों से लेकर बॉलीवुड हस्तियों तक को मंत्रमुग्ध कर दिया है। चिकनकारी को छाया कार्य के रूप में भी जाना जाता है। यह कपड़े पर सुई के साथ कढ़ाई की एक जटिल और सुरुचिपूर्ण कला है। सुईवर्क के लिए समय और धैर्य की आवश्यकता होती है, जिसके बाद ही कपड़ा आकर्षित दिखाई देता है। यह हाथ से की जाने वाली नाजुक कढ़ाई है, जिसके लिए शिफॉन, मलमल, रेशम, ऑर्गेना, नेट, कॉटन कपड़े का इस्तेमाल किया जाता है। पहले कपड़ों पर सफेद धागे से कढ़ाई की जाती थी लेकिन बदलते समय के साथ कलर्ड धागों का यूज भी किया जाने लगा। पहले परंपरागत रूप से सफेद मलमल के कपड़े पर कढ़ाई की जाती थी लेकिन अब मलमल और कपास के पेस्टल रंगों के कपड़ों पर कढ़ाई की जाती है। इसे सेक्विन, बीड्स और मिरर वर्क के साथ अट्रैक्टिव बनाया जाता है।

कृतिका यादव, 2020 चिकनकारी उत्तर प्रदेश, भारत की एक बहुत ही नाजुक और जटिल छाया कार्य प्रकार की कढ़ाई है। यह मुख्य रूप से लखनऊ और आसपास के क्षेत्रों में प्रचलित है। प्रारंभ में कढ़ाई सफेद धागे से की जाती थी, रंगहीन मलमल पर जिसे रंगहीन कहा जाता है, आज जॉर्जेट, शिफॉन, सूती और अन्य महीन कपड़ों का भी उपयोग किया जाता है। मुख्य रूप से कपड़ों को सजाने के लिए उपयोग किए जाने वाले अलंकरण से, चिकनकारी कढ़ाई अब कुशन कवर, तकिया पर्ची, टेबल लिनन आदि जैसे घरेलू सजावट के सामानों में फैल गई है।

चिकनकारी' शब्द के नामकरण के पीछे कई सिद्धांत हैं | एक संस्करण के अनुसार, यह शब्द फारसी शब्द चेन या शेक से लिया गया है, जिसका अर्थ है धागे के साथ कपड़े पर नाजुक पैटर्न बनाना। दूसरों के अनुसार, यह चिकन या सेक्विन सिक्के का विकृत संस्करण हो सकता है, जिसकी कीमत रु 4 वह राशि जिसके लिए इसे खरीदा गया था। फिर भी एक और स्पष्टीकरण बंगाली भाषा में चिकन शब्द को बताता है जिसका अर्थ है 'ठीक'।

इस महीन कशीदाकारी को 'सफेद कशीदाकारी' के नाम से जाना जाता है क्योंकि यह मुख्य रूप से सफेद सूती धागों के साथ सादे बुने हुए कपड़े को एक बहुत ही सूक्ष्म लेकिन समृद्ध

अनुश्री कुमार, 2020 नामांकित कपड़े पर सुंदर रूप,/डिजाइन को अलंकृत करने के लिए सरल उपकरण का उपयोग करके अत्यधिक विस्तृत कार्य किया जाता है। पारंपरिक रूप से चिकन का काम सफेद कपड़े पहने जा रहा है। बाद में बाजार में चलने को पूरा करने के लिए उसमें तरह-तरह के कपड़ों का इस्तेमाल होने लगा। कपिस, रेशम, शिफॉन, क्रेप, जॉर्जेट कच्चा ऊन, नारंगी शिफॉन जैसे कपड़े के लिए उपयोग किए जाने हैं। मोजेक का पारंपरिक रूप से लेआउट पर रूपरेखा बनाने के लिए उपयोग किया जाता है। गोल्डन जरी, सिल्वर जरी, बहुत से दिखने वाले प्रकार भी चिकनकारी पुलाव करने के लिए उपयोग किए जाते हैं। इंडिगो रंग मुद्रण प्रक्रिया में प्रयोग किया जाता है। छपाई के निशानों को साफ करने के लिए

www.ignited.in

कपड़े धोने के लिए नदी के पानी का उपयोग किया जाता है। कपड़ों के लिए कड़ापन प्राप्त करने के लिए वाइटरिंग का उपयोग किया जाता है।

निष्कर्ष

चिकनकारी कढ़ाई एक क्लासिक और कालातीत शिल्प है जिसने लंबे समय से भारतीय संस्कृति और फैशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह अपने विशिष्ट डिजाइन, सटीक शिल्प कौशल और बहुमुखी प्रतिभा के कारण दुनिया भर के फैशन प्रेमियों और डिजाइनरों द्वारा पसंद किया जाता है। चिकनकारी की सुईवर्क पिछले कुछ वर्षों में बदल गया है, लेकिन इसने अपनी पारंपरिक शैली को बरकरार रखा है, जिससे यह सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। हाउस ऑफ चिकनकारी देश के शिल्पकारों और शिल्पकारों पर गहरा प्रभाव डालने में विश्वास रखता है। हम अपने कारीगरों की शिल्प कौशल को संजोते हैं और इन उत्कृष्ट कृतियों को बड़े दर्शकों तक पहुंचाना चाहते हैं। वर्तमान में, चिकनकारी को लखनऊ की धड़कन के रूप में जाना जाता है, यह लखनऊ की परंपरा बन गई है।

संदर्भ

1. अब्राहम, टी.एम. (1964)। भारत में हस्तशिल्प. ग्राफ़िक्स कोलंबिया, न्यू राजिंदेमागर, नई दिल्ली।
2. अग्रहरि आर और बराड़ के के (2017)। लखनऊ चिकनकारी कारीगरों द्वारा सामना की जाने वाली बाधा। एशियाई जे. गृह विज्ञान. 12(2): 339-348
3. भारद्वाज, ए.एस. (2014)। चिकनकारी में नवाचार. अंतर्राष्ट्रीय. जे. रेस. एवं विकास तकनीक. और प्रबंधन विज्ञान. – कैलाश, 21(4) : 127-134.
4. भूषण, जे.बी. (1990)। भारतीय कढ़ाई. प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार
5. चट्टोपाध्याय, के. (1985)। भारतीय हस्तशिल्प की महिमा. क्लेरियन बुक्स, नई दिल्ली।
6. चट्टोपाध्याय, के. 1965, टेक्सटाइल्स एंड एम्ब्रॉयडरी ऑफ इंडिया, हंस प्रकाशन, दिल्ली, पीपी. 72-75।
7. धमीजा, जे., (1985) गुजरात के शिल्प। मेपिन पब्लिकेशन प्रा. लिमिटेड अहमदाबाद.
8. फिशर, जे. 1972, सुई प्वाइंट टेपेस्ट्री की रचनात्मक कला, सेनफेल्डर प्रिंटिंग कंपनी लिमिटेड, न्यूयॉर्क, पी। 5.
9. हस्तशिल्प क्षेत्र कालीन कढ़ाई क्षेत्रों में महिला श्रमिकों पर व्यापार और वैश्वीकरण का प्रभाव पीडीएफ 30 अगस्त, 2010 को पुनः प्राप्त किया गया।
10. जेना, पी.के. (2008, नवंबर)। भारतीय हस्तशिल्प का वैश्वीकरण: एक मानव विकास दृष्टिकोण। उड़ीसा समीक्षा. माइक्रो, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय। (2015)।
11. लाधा, डी.जी. (2008, 19 दिसंबर)। भारतीय कढ़ाई के प्रकार, भारत के पारंपरिक हस्तनिर्मित परिधान, कढ़ाई, सिलाई के प्रकार, Fibre2fashion.com।
12. पेन, शीला. (1989)। चिकन कढ़ाई में टांके: भारत का पुष्प सफेदी। यूके: शायर नृवंशविज्ञान, 35-44।

Corresponding Author

Kiran Sharma*

Research Scholar, Bhagwant University, Rajasthan